ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.04, January: 2024

"महाविद्यालय षिक्षकों में तनाव, नैराष्य एवं दुष्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन"

दीपक ठाकुर (शोधार्थी) मनोविज्ञान विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़
डॉ. पवन कुमार (शोध निर्देशक) मनोविज्ञान विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

प्रस्तावना –

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनोसामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएँ धार्मिक प्रवृति से सम्पृक्त थी, जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ–साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक ढांचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे। जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति था अतः उस समय शिक्षक की भूमिका ईश्वर के रूप में थी। ''शिक्षक मोक्ष मार्ग का दाता था तथा शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग थी।''

''शिक्षक वह चिराग है जो स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी प्रदान करता है। शिक्षक राष्ट्र निर्माता है, शिक्षक की महिमा का गुणगान बहुत प्रकार से किया जाता है। यहाँ तक कि उसे परब्रह्मा के समकक्ष मानकर ''गुरूब्रह्मा गुरूर्विष्णु'' कहकर स्तुति की जाती है।'' कहीं उसे ईष्वर के समान एवं कहीं ईश्वर से बड़ा अर्थात् परमात्मा से मिलाने वाला कहा गया है। शिक्षक की प्रत्येक गतिविधि एवं उसके आचरण को विद्यार्थी एवं सम्पूर्ण समाज सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं। उसी आधार पर शिक्षक की छवि भारतीय समाज में प्रतिबिम्बित होती है। शिक्षक अपने चरित्र, सद्गुण, मानवीय मूल्य एवं विशेषताओं को विद्यार्थियों में पहुंचाना चाहते हैं उन्हें अपने सुधार पर ध्यान देकर किसी को जो कुछ बनाना चाहते हैं, तो उन्हें स्वयं भी कुछ बनना पड़ेगा।

चूँकि छात्र शिक्षक को आदर्ष मानता है इसलिये छात्र के गुणों जैसे अध्ययनशीलता, ईमानदारी, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता आदि के विकास का दायित्व उस पर होता है साथ ही वह छात्रों की मानसिक अवस्था या स्थिति से अवगत होकर उसमें अपेक्षित सुधार करता है। इन अवस्थाओं में संवेगात्मक स्थिति के साथ–साथ तनाव, चिन्ता व निराषा आदि परिस्थितियों से छात्रों को बाहर निकाल कर एक सकारात्मक सोच की ओर अग्रसर करने का कार्य करता है।

''महाविद्यालयों के शिक्षकों को आधुनिकीकरण एवं नयी सामाजिक व्यवस्थाओं में आवश्यक मूल्यों की पर्याप्त जानकारी और इनके प्रति पूर्ण आस्था होनी चाहिए। उन्हें समाज में वांछनीय सामाजिक परिवर्तन लाने, शाला में उपयुक्त प्रकार का समाजीकरण करने तथा उचित सामाजिक मानसिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में उत्पन्न करने की दिशा में विशेष प्रयास करना चाहिए।

राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव एवं दुश्चिन्ता में परस्पर क्या सम्बन्ध है? राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का स्तर क्या है? राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का स्तर क्या है? राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव में क्या अन्तर है? राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता में क्या अन्तर है? आज महाविद्यालयों के शिक्षक चाहे वह अपने कार्य को लेकर हों, चाहे महाविद्यालय को लेकर या फिर छात्रों को लेकर, चिन्तित एवं तनावग्रस्त क्यों दिखाई पड़ते हैं? क्या महाविद्यालयों के शिक्षक नैराश्यग्रस्त हैं? महाविद्यालयों के शिक्षकों मे पाये जाने वाले तनाव एवं दुश्चिन्ता का प्रभाव इन महाविद्यालयों पर तो नहीं पड़ता? इन महाविद्यालयों में दिया जा रहा शिक्षण का कार्य तो प्रभावित नहीं होता। यही नहीं राष्ट्र का निर्माता कहे जाने वाले भावी नागरिकों को तैयार करने वाले महाविद्यालयों के शिक्षक यदि स्वयं दुश्चिन्ताओं के स्वरूप का वरण किए हुए होगा तो उस राष्ट्र के विकास की संभावनाओं पर विचार कैसे किया जा सकता है? वह शिक्षक स्वयं दुश्चिन्तित व नैराश्यग्रस्त होगा तो अपने छात्रों को किस प्रकार समझ सकेगा? उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकर्त्ता ने ''महाविद्यालय शिक्षकों में तनाव एवं दुश्चिन्ता का अध्ययन'' विषय पर शोध करने का निर्णय लिया।

शोध अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता –

मानव समाज के अभ्युदयकाल से लेकर अब तक के विकास पर यदि दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि व्यक्ति का जीवन इतना जटिल कभी नहीं रहा जितना कि आज है। जन्म के बाद बालक ज्यों–ज्यों समाज के सम्पर्क में आता है, स्वयं को समस्याओं से घिरा पाता है। गृह में, विद्यालय में, समाज में और अपने दैनिक कार्यों में प्रायः स्वयं को अनेक समस्याओं से घिरा पाता है और वही समस्याएं उसको तनावग्रस्त बना देती हैं और वह मानसिक

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.04, January: 2024

रूप से अस्वस्थ और दुश्चिन्ता का शिकार हो जाता है। परिवर्तित सामाजिक परिवेश में मानव जीवन की जटिलता एवं अनश्चियात्मक स्थिति संभवतः मनुष्य की दमित भावनाओं का कारण बनती जा रही है। दुश्चिन्ता जो एक प्रकार का मानसिक संताप है, जिसका महत्वपूर्ण अंश डर या आशंका है जो कई प्रकार से स्वाभाविक है और मानसिक व्याधियों का द्योतक है। दुश्चिन्ता के अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन व्यक्ति की निम्न आर्थिक स्थिति दुश्चिन्ता का प्रबल कारण दिखाई पड़ता है। आज का युग आर्थिक युग है और ऐसा भी कहा गया है कि ''सर्वगुणाः काचनम् आश्रयन्ति'' अर्थात सोने में सभी गुण निहित होते हैं और आज हम देखते हें कि यह सत्य भी है। आज सब चीज पैसे की धूरी पर घूमती है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन धन है। एक अध्यापक के जीवन में धन की कमी निश्चित रूप से कई अभावों का सृजन करती है और कभी यही दुश्चिन्ता की जनक हो जाती है।

इसी प्रकार दुश्चिन्ता को हम विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं का समावेश मान सकते हैं क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। हर मनुष्य अपने में आत्मगौरव का एक स्तर बनाये रखता है। यह गौरव तब तक बना रहता है जब कि व्यक्ति असफलताओं से दूर बना रहता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनुष्य कभी असफल ही न हो, जीवन में असफलताएं तो आती है लेकिन व्यक्ति अपनी योग्यता व विवेक से असफलताओं से संघर्ष करता है और पराभूत करके लक्ष्य प्राप्ति कर लेता है। लक्ष्य प्राप्ति के साथ ही तनाव, निराशा और आत्महीनता समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि लक्ष्य प्राप्ति सुगमता से नहीं होता। इसमें व्यक्ति को कई बाधाओं का समाना करना पड़ता है। तब कहीं वह लक्ष्य तक पहुंचता है। यही बाधापूर्वक स्थिति दुश्चिन्ता कहलाती है। व्यक्ति इन दुश्चिन्ताओं से ग्रसित होकर संतप्त हो जाता है और स्वयं को बहुत दुखी महसूस करता है।

व्यक्ति की अनेक इच्छाएँ, आवश्यकताएँ और रूचियां होती है किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि उसकी समस्त इच्छाएँ एवं आवश्यकताएं पूरी हो जाए। पर्यावरण में कुछ विरोधी शक्तियों का सामना भी करना पड़ता है। जिससे उसके मन में एक प्रकार का संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। इसी प्रकार जब व्यक्ति को दो बिल्कुल विरोधी वस्तुओं में से एक का चुनाव करना पड़ता है तो भी उसे संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

अभिप्रायः यह है कि हम तनाव का अनुभव तब करते हैं जब समस्याओं को सुलझाने के लिए हमारे द्वारा किए गए साधारण प्रयत्न भी सफल नहीं होते। वास्तव में तनाव का अनुभव एक नितान्त व्यक्तिगत मसला है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में आई समस्यात्मक स्थितियों का समायोजन अपने तरीके से करता है और सफलतापूर्वक जीवन यापन करता है। समस्याओं से निपटने के इन्हें व्यक्तिगत तरीकों में जब अवरोध होता है तब व्यक्ति में तनाव उत्पन्न होता है। तनाव को प्रत्यक्षीकृत खतरों के रूप में भी व्यक्त किया जाता है अर्थात् जब व्यक्ति किसी स्थिति में अपने लिए खतरा देखता है तो उसे तनाव होता है। स्थिति में खतरे का प्रत्यक्षीकरण उद्दीपक स्थिति से संबंधित कारकों तथा व्यक्ति से संबंधित कारकों (व्यक्ति के ज्ञानात्मक स्त्रोत, समायोजी प्रक्रिया तथा व्यक्तित्व लक्षण) दोनों पर निर्भर करता है।

आज महाविद्यालय का अध्यापक मानसिक बोझ से लदा हुआ प्रतीत होता है, जिसके फलस्वरूप वह एक स्वतंत्र, चिन्तनशील, संवेदनशील और पौरूषवान व्यक्ति में न होकर, कुंठित घृणित, निराशावादी, तनावग्रस्त व्यक्ति बनता जा रहा है और यही कारण है कि शिक्षण का लक्ष्य कोसों दूर रह जाता है, अतः शोधकर्ता के अनुसार अगर शैक्षिक अनुसंधान का स्थान सर्वोपरि है तो शिक्षा व्यवस्था के समक्ष उपस्थित इन समस्याओं एवं चुनौतियों के कारणों, प्रभावों एवं निराकरण के लिए अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने महाविद्यालय के शिक्षकों में तनाव एवं दुश्चिन्ता का अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है, बल्कि महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता को लेकर शोध अध्ययन नहीं हुआ है। अतः इन शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन कर महाविद्यालयों के शिक्षकों, संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

अध्ययन के उद्देश्य –

(1) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का अध्ययन करना।

- राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय एवं निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.04, January: 2024

- निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

(2) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य का अध्ययन करना।

- राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय एवं निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

(3) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का अध्ययन करना।

- राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय एवं निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

(4) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता के मध्य परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना –

(1) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

1. राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. राजकीय एवं निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. राजकीय (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

(2) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

1. राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. राजकीय एवं निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. राजकीय (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

(3) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के दुश्चिन्ता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

1. राजकीय एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों के दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. राजकीय एवं निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. राजकीय (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. निजी (जिलानुसार – मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा) महाविद्यालयों के शिक्षकों के दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

(4) राजकीय एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.04, January: 2024

शोध अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत अध्ययन ''राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता का अध्ययन'' में अनुसंधान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित महाविद्यालयों में से 100 राजकीय व 100 निजी शिक्षकों को न्यादर्श में शामिल किया गया है।

न्यादर्श तालिका

जिला	न्यादर्श		योग
	राजकीय महाविद्यालय शिक्षक	निजी महाविद्यालय शिक्षक	
मोहाली	25	25	50
रूपनगर	25	25	50
बठिंड़ा	25	25	50
मोगा	25	25	50
योग	100	100	200

न्यादर्श चयन विधि :–

प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरणों के नाम :–

1. शारीरिक तनाव लक्षण मापनी – करियाकाऊ एवं शटक्लिप द्वारा निर्मित मापनी का हिन्दी अनुवाद।
2. नैराश्य प्रतिक्रिया मापनी – डॉ. बी.एम. दीक्षित एवं डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित।
3. दुश्चिन्ता मापनी – डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. एल.एन.के. सिन्हा द्वारा निर्मित।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि :

1. टी–परीक्षण

समग्र निष्कर्ष :–

शोधकर्ता ने **''महाविद्यालय शिक्षकों में तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर शोधकार्य किया जिसमें राजकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों में तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता निम्न स्तर की पाई गई, जबकि निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों में तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता अधिक पाई गई अर्थात निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों में राजकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता का स्तर अधिक पाया गया। शोधकर्ता ने मोहाली, रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा जिले के महाविद्यालयों के शिक्षकों पर कार्य किया जिसमें उसने पाया कि रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा के राजकीय शिक्षक मोहाली के राजकीय शिक्षकों से अधिक तनावग्रस्त है जबकि रूपनगर एवं मोगा के राजकीय शिक्षक बठिंडा के राजकीय शिक्षकों से अधिक तनाव ग्रस्त है लेकिन मोहाली के निजी महाविद्यालयों के शिक्षक रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा के निजी शिक्षकों से अधिक तनाव ग्रस्त है। इसी प्रकार मोहाली के राजकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों में रूपनगर एवं बठिंडा जिले के शिक्षकों से ज्यादा नैराश्य पाया गया। रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा के निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों में नैराश्य की मात्रा मोहाली के शिक्षकों से कम पाई गई। मोहाली के राजकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों में दुश्चिन्ता की मात्रा भी रूपनगर, बठिंड़ा एवं मोगा के शिक्षकों कम पाई गई। जबकि बठिंडा के निजी शिक्षकों में रूपनगर के शिक्षकों से अधिक दुश्चिन्ता पाई गई। मोगा के निजी शिक्षक रूपनगर के शिक्षकों की अपेक्षा कम दुश्चिन्ता ग्रस्त पाये गये।

शोध निष्कर्षों की समग्र भाव में उपादेयता :–

किसी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है। शोधकर्ता ने समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया है। उक्त शोध मानव के दृष्टिकोण को मध्य नजर रखते हुए सार्थक सिद्ध होगा, क्योंकि यह शिक्षक तथा समाज को पथ प्रदर्शक का कार्य करेगा। शिक्षक राष्ट्र का दिशा निर्देशक व भविष्य का निर्माता होता है। वह विद्यार्थियों में जिस प्रकार की सोच विकसित करेगा विद्यार्थी उसी सोच की तरफ झुकेंगे। उक्त शोध शिक्षकों में व्याप्त तनाव, नैराश्य एवं दुश्चिन्ता को दूर करने की सोच विकसित कर सकेगा। शिक्षक के संदर्भ में कोई भी अध्ययन किया जाए तो वह सार्थक ही होगा क्योंकि इस दिशा में प्रत्येक अध्ययन फलदायी तथा समाज व राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान करने वाले होते हैं। आज समाज में ज्ञान का प्रसार आवश्यकतानुकूल सन्तति का विकास विधान व मान्यताओं के प्रसार में शिक्षकों की केन्द्रीय भूमिका है। यदि हम उनकी आवश्यकतानुकूल कार्य क्षमताओं एवं सामाजिक दृष्टिकोण से प्रतिबिम्बित अपेक्षाओं

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-1, No.04, January: 2024

का अध्ययन करते हैं तो वह अध्ययन स्वतः ही सार्थक है। अतः उक्त अध्ययन शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित कर उनमें अपने अन्दर पायी जानी वाली दुश्चिन्ता, नैराश्य तथा तनाव को कम करने के प्रति जागरूक करने का प्रयत्न करेगा। यह कार्य समाजोपयोगी तथा शिक्षकों के लिए फलदायी होगा, जिससे हमें शिक्षक के वर्तमान स्वरूप, भावी स्वरूप का अध्ययन सम्भव हो सकेगा।

सुझाव :–

(A) भावी अनुसंधान हेतु सुझाव :–

1. अध्ययन पंजाब के सभी संभागों को न्यादर्श के रूप में लेकर किया जा सकता है।
2. उक्त चरों पर ग्रामीण व शहरी जनता को न्यादर्श के रूप में चुनकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. तनावों का विद्यार्थियों की निष्पति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षकों के अतिरिक्त विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों, अभिभावकों, महिलाओं, राजनीतिज्ञों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श 200 लिया गया है लेकिन उक्त समस्या का अध्ययन बडे न्यादर्श को लेकर भी किया जा सकता है।
6. लिंग, आवास एवम् सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के प्ररिपेक्ष्य में महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव, दुश्चिन्ता एवं नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता एवं तनाव का कार्य की दषाओं के प्ररिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।
8. महाविद्यालयों के महिला व पुरुष शिक्षकों का व्यक्तित्व, समायोजन एवं शिक्षण निष्पादन क्षमता का उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्ररिपेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।
9. महाविद्यालयों के शिक्षकों के तनाव एवं नैराश्य के स्वरुप एवं कारणों का उनके बौद्धिक स्तर तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्ररिपेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
10. पंजाब राज्य के शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता स्थिति के मानकों पर आंतरिक एवं बाह्य पर्यावरण की वास्तविक स्थितियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- अग्रवाल, जे.सी. (2000). ''स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का विकास' आर्य बुक डिपो, 30, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली, पृ.सं. 252
- अग्रवाल, सुभाष चन्द्र (1998). ''अध्यापक–प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर चिंता के प्रभाव का अध्ययन'', पृ. सं. 44
- अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005). ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृ.सं. 326–327
- आर.एन., केवट (2007). ''राष्ट्रीय चेतना के संदेश वाहक : शिक्षक, शिविरा पत्रिका, पृ.सं. 12
- आर्य, हरफूल ''(2000) : ''रिसर्च पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ.सं. 96
- कोठारी, सी.आर. (2008). ''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृ.सं. 2
- पाठक पी.डी. (2007). '''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- पाण्डेय, रामशकल (2007). ''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृ.सं. 133–136
- भार्गव हरप्रसाद, श्रीवास्तव डी.एन.,पाण्डे जगदीश, सिंह रणजीत (2001). ''आधुनिक समाज मनोविज्ञान'', शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक, आगरा, पृ.सं. 265
- भार्गव, महेश (2007). आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण+मापन' एचपी. भार्गव बुक हाउस आगरा पृ.सं. 463–64,526
- माथुर,एस.एस. (2008). ''शिक्षा मनोविज्ञान'' अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृ.सं. 55,76,421.425
- मुकुन्द देवधर (2003). ''अच्छा शिक्षक कौन'',जुलाई, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, पृ.सं. 9

Copyright @ 2024 Author